ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO. 180-183
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

गंगावतरण में रस परिपाक

ओम प्रकाश तिवारी
असि0 प्रोफे0–संस्कृत विभाग, श्री नीलम देवी पी0जी0 कालेज, धतुरी टोला, बैरिया–बलिया (उ0प्र0) भारत

(क) अंगीरस शान्त– महाकाव्य का अंगी रस शान्त प्रतीत होता है। कविवर दीक्षित ने ग्रन्थारम्भ में ही बड़ी स्पष्टवादिता के साथ स्वीकार किया है कि कठोरता के कारण वह तपस्या नहीं कर सकते क्योंकि कवियों में प्राकृतिक सुकुमारता होती है। अतः उनकी प्रवृत्ति गंगा को काव्य रूप में निबद्ध करने में हुई है जिससे वे परम पुरुषार्थ की सहज प्राप्ति कर सकें–

तपसा लभ्यतां तस्या–स्तपसश्च कठोरताम्।
पश्यन्वाचा तपस्यामि काव्यसन्दर्भरूपया।। 1.55

गंगावतरण का उद्देश्य भगीरथ के पूर्वजों सगर पुत्रों का उद्धार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के साथ महाकाव्य का समापन होता है। इससे भी महाकाव्य का शान्त रस प्रधान होना प्रमाणित होता है। भगीरथ की तपस्या, महत्तर उद्देश्य के लिए जीवन भर समर्पित रहना और अपने लक्ष्य को पा लेने में सफल होना उनके उदात्त चरित्र को रेखांकित करता है। इस दृष्टि से भगीरथ की दया, वीरता और धर्म वीरता को पुष्ट करने वाले वीर रस के प्रकरण शान्त रस के उपस्कारक हैं। गंगावतरण का तात्कालिक लाभ सगर पुत्रों का उद्धार अर्थात् मोक्ष प्राप्ति है तथा दूरगामी लाभ सभी सांसारिक मनुष्यों को मुक्ति प्रदान करना है। इस दृष्टि से भी चतुर्थ पुरुषार्थ का साधक होने से यह महाकाव्य शान्त रस प्रधान है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

(ख) अंगभूत रस, वीर, शृगार, रौद्र आदि इस महाकाव्य में वीर रस शान्त रस का अंगभूत है। वीर रस के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत करना अप्रसांगिक नहीं होगा–

तीर सीमनि स दक्षिणसिन्धो– राश्रमं कमपि संपरिकल्प्य
आरराध नियमैरतिमात्रै– र्देवमम्बुजभवं नरदेवः ।। 2.21

राजा भगीरथ दक्षिण समुद्र के किनारे आश्रम बनाकर नियम पूर्वक ब्रह्मा की अत्यधिक आराधना करने लगे।

स क्षणादजयदासन भेदा– ञ्शिक्षणाञ्चिरतरं खुरलीषु
जानता निखिलमभ्यसितव्यं कस्य कुत्र न भवेदुपयोगः।। 2–24

राजा भगीरथ ने अस्त्र–शस्त्रों के शिक्षणजन्य चिरन्तन अभ्यास को विस्मृत कर योगासन को प्राप्त किया। सम्पूर्ण आसनों के परिज्ञान से कहाँ किसका उपयोग नहीं हो सकता, अर्थात् अभ्यास निरर्थक नहीं होता।

बाहुजोऽयमथ भानुकुलीन– स्तत्र चाप्रतिभटः स्वमहिम्ना।
तावतापि तपसा यदि युक्त– स्तत्समीक्षितुमपि क्षमते कः।। 2.28

राजा भगीरथ सूर्यवंशी हैं और अपनी महिमा से अद्वितीय योद्धा भी हैं। यदि इन्होंने इतना कठोर तप किया है तो इन्हें देखने मैं कौन समर्थ होगा?

नान्नमाद्रियत नाम्बु न मूलं का भविष्यति कथापि फलानाम् ।
मारुतं परमभुङ्क्त निदाघ– स्तं च हर्तुमिव तस्य तदाभूत्।। 2.30

उन्होंने कन्द मूल अन्नादिकों का आदर नहीं किया यानी परित्याग कर दिया; तो फलों की बात ही क्या होगी? वे केवल वायु पान करते थे। तीव्र घर्म उस समय ऐसा लग रहा था मानो वह उनका अपहरण कर रहा हो।

प्रसाद्यमाना मुहुरित्थमुक्तिभि– र्भगीरथाय प्रससाद सा ततः
अपि स्वयात्रानुपपत्तिगोचरा मनेन च प्रास्तुत संकथां मिथः।। 3.17

सूक्तियों से बार–बार प्रसन्न की जाती हुई सुरनदी राजा भगीरथ पर प्रसन्न हो गयी और अपनी यात्रा सम्बन्धित जानकारी की कथा को भगीरथ के सक्षम प्रस्तुत किया।

सस्नौ जजाप दध्यौ च स संध्यास्वखिलास्वपि।
कथाभिः कालकालस्य जजागर च शर्वरीः ।। 4.5

राजा भगीरथ नित्य–प्रति स्नान, जप और ध्यान पूर्वक संध्या करने लगे एवं रात्रि में महाकाल शिव की कथा श्रवण जागरण करने लगे। इसके अतिरिक्त शृंगार, रौद्र, अद्भुत आदि रसों की झाँकी भी महाकाव्य में स्थान–स्थान पर देखने को मिलती है। कुछ उदाहरण देखिए–

गच्छन्पुरस्तस्य रथो यथेच्छं गङ्गा च पश्चात्तमनुव्रजन्ती।
प्रायेण घाटी ग्रहणप्रसक्तौ बालावुभौ केलिपराविवास्ताम्।। 6.44।।

अनुरूपी लेखक

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

आगे–आगे भगीरथ का स्वच्छन्द गामी रथ चल रहा था और गंगा उसके पीछे–पीछे चल रही थी। उस समय ऐसा लग रहा था मानों क्रीड़ारत दो बालक आपस में लड़ने लगे हों।

वियोगखिन्नास्तपसा विषण्णं स्वप्नेक्षिताः स्वप्नदशानुभूतम्।
स्मेराननाः स्मेरमुखारविन्दं तमभ्युपेयुस्तरुणं तरुण्यः।। 8.89।।

वियोग से खिन्न तथा राजा भगीरथ को स्वप्न में देखने वाली सुमुखी तरुणियों के तपस्या से कृश किन्तु सुन्दर मुख कमल वाले स्वप्नदशा में जैसा अनुभव किया गया था, उसी प्रकार राजा भगीरथ को प्राप्त किया। अर्थात् उनका मनोरथ पूर्ण हो गया।

पादे निपेतुः परिरभ्य दीर्घं तस्थुर्मुखैस्तस्य मुखं चुचुम्बुः।
संकल्पयोगाच्चिरविप्रलब्धा– स्तथापि तं नैव विशश्वसुस्ताः।। 8.90।।

तरुणियाँ उस समय राजा भगीरथ के पैरों में गिर पड़ी उनका गाढ़ालिंगन किया और अपने मुख से उनके मुख का चुम्बन किया यद्यपि मानसिक रूप से वे चिर समय तक वियुक्त रहीं तथापि उन्होंने उनकी उपलब्धि से इस समय वे चिर वियोग को भूल गयीं।

ततो विलम्ब्य क्षणमागमय्य पताकिनीमप्यनुसंपतन्तीम्।
स राजचिह्नैरुपसेव्यमानः शनैरयोध्याभिमुखं प्रतस्थे।। 8.82।।

इसके बाद कुछ ही विलम्ब के बाद क्षणमात्र में आयी हुई सेना को भी प्राप्त कर राजचिह्नों से विभूषित राजा भगीरथ धीरे–धीरे अयोध्या की तरफ चलने लगे।

पताकिनीभिः प्रविशन्तमन्त– र्लाजैरवर्षन्पुरयोषितस्तम्।
गंगावतारावसरे पुरेव दिव्यैः प्रसूनैर्दिवि देवकन्या :।। 8.86।।

जिस प्रकार गंगावतरण के समय स्वर्ग(आकाश) से देवकन्याओं ने दिव्य पुष्प वृष्टि की थी, उसी प्रकार नगर प्रवेश होने पर सेना सहित राजा भगीरथ के ऊपर पौरांगनाओं ने लाजावर्षण किया।

संरक्षन्ननुजीविनो वितरणैः संप्रीणयन्नर्थिनः
पौराञजानपदानपि प्रतिदिनं पश्यन्दयादृष्टिभिः ।
आ वेधोगृहमा रसातलमपि स्वं नाम विश्रावय–
न्दीनत्राणकृता भुजेन बुभुजे देवः समस्तां भुवम्। 8.91

इसके बाद अनुजीवियों का संरक्षण करते हुए याचकों को अभीष्ट प्रदान से प्रसन्न करते हुए पुरवासियों को निरन्तर दयादृष्टि से देखते हुए आकाश प्रर्यन्त अपने नाम का विस्तार करते हुए दीनों का परित्राण करने वाली भुजा से राजा भगीरथ ने सम्पूर्ण पृथ्वी को भोग किया।

दयालुरथ भूतेषु दण्डयेष्वासीत्स निर्दयः ।
संजीवनोऽपि लोकानां चन्द्रमाः पथिकान्तकः।। 1. 64

राजा भगीरथ प्राणियों में दयाभाव रखते थे और दण्ड के नियमों को कठोरता से पालन करते थे। लोक में चन्द्रमा संजीवन है और पथिकों को अन्तकर अन्त तक पहुँचाने वाला भी है।

प्रददावेव सोऽर्थिभ्यः प्रतिजग्राह न क्वचित्।
वासवादसकृद्वृष्टिं लिप्समानस्त्वलज्जतः।। 1.79।।

वह राजा भगीरथ निरन्तर याचकों को दान करते थे, किसी से कुछ भी नहीं ग्रहण करते थे। अपितु जलवृष्टि की तरह स्वर्ण वृष्टि न कर पाने पर लज्जित हो जाते थे।

दातुं प्रवृद्धश्चन्द्रोऽपि पक्षे पक्षेऽपचीयते।
स तु भूयोऽप्यवर्धिष्ट सन्ततं वितरन्नृपः ।। 1.81।।

पूर्णिमा का चन्द्रमा किरण व्यय से धीरे–धीरे(पक्ष में) क्षीण होता है, किन्तु याचकों को निरन्तर दान देते हुए राजा भगीरथ पुनः–पुनः वृद्धि को प्राप्त हो रहे थे।

स्वस्तिकस्थगितोरोजाः सीत्कारतरलाधराः।
स्नानान्तेषु स्त्रियो मुग्धाः यूनामाचकृषुर्मनः ।। 4.22।।

स्तनों को पतले वस्त्र से आच्छादित करने वाली तथा सीत्कार करने में चंचल अधरों वाली मुग्धा स्त्रियों ने स्नानान्त में युवकों का मन आकृष्ट कर लिया।

प्रकृत्या कुटिलो मारः पवनस्तुहिनाकरः ।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

दीर्घाश्च रात्रयो हन्त जीवन्तु पथिकाः कथम् ।। 4.15 ।।

स्वभाव से कुटिल कामदेव और वर्फीली हवा तथा बड़ी–बड़ी रात्रियाँ दुःख हैं। बेचारे बटोही कैसे जीवित रहे।

कथंचिदेनः कपिलापराधजं पितामहानामपनेतुमिच्छता ।
अकर्मभूमावधिगत्य तावकं पयः किमम्ब प्रतिपद्यतां मया। 3.23

हे माँ, कपिल के अपराध से उत्पन्न पितरों के पाप को दूर करने की इच्छा रखने वाला मैं अकर्म भूमि (ब्रह्मलोक) में आपके जल को ग्रहण करके मुझे क्या करना है?

प्रियतमाभिगमाय सुदूरतो– ऽप्युपगता सरितो जलदागमे।
नमनवेक्ष्य शुचेव तदास्पदे प्रथम एव पदे विलयं गताः।। 8.14 ।।

प्रियतम समुद्र से मिलने के लिए दूर से आयी हुई नदियाँ बादलों के आ जाने पर समुद्र को न देखकर(विरह के कारण) शोक से उसी स्थान में विलीन हो गयी।

समुपलभ्य पयांसि यथापुरं मुमुदिरे न तथा जलामानवाः।
सलिलशोषदशासु लयं गतान् समनुचिन्त्य शिशूनरुदन्यथा।। 8.28 ।।

पानी सूख जाने पर नष्ट हुए अपने बच्चों को स्मरण कर जलमानवों में जितना रोदन किया, अत्यधिक जलों के मिलने पर वे उतना हर्षित न हो सके।

अयमगाहत शोषमिह स्थिता जलचरा बहवः प्रलयं गताः ।
इति तदम्बुनरा मुदिताः क्षणा– दकथयन्गतकल्पकथामिव ।। 8.31 ।।

किसी समय जब समुद्र सूख गया था, उस समय उसमें रहने वाले अनेक जल–जन्तु मर गये थे। इस समय पर्याप्त जल होने से प्रमुदित जल मानुषों ने बीती हुई कल्पित कहानी जैसे कहा।

कपिलकोपहुताशन्संभृतं स पुरतः पितृभस्म निरीक्ष्य ततः
प्रमदशोकसमागमूर्च्छितो द्विविधमश्रुदधौ युगपद्दृशो :।। 8.48 ।।

राजा भगीरथ कपिल मुनि के क्रोधाग्नि से भस्मीभूत पितरों की राख को सामने देखकर अत्यधिक शोक से मूर्च्छित हो गये और उनकी आँखों में आँसू आ गये।

अथ रथादवतीर्य भगीरथे सगरजानुपसर्पति वीक्षितुम्।
भसितराशिमम्ज्जयदम्भसा भगवती सुरलोकतरंङ्गिणी।। 8.49 ।।

इसके बाद रथ से उतरकर सगरात्मजों की राख को देखने के लिए राजा भगीरथ के पहुँचने से पूर्व ही सुरनदी ने भस्म को अपने जल में तिरोहित कर दिया।

यदस्य युद्धेषु महत्कुतूहलं, य उद्यमो यत्प्रतिपालनं च वा।
इदं किमङ्गश्रुतमीक्षितुं नु वा, महीभुजोऽन्यस्य महोत्सवेष्वपि।। 1.83 ।।

राजा भगीरथ के युद्ध में जो विशाल कौतुक और प्रतिपालन के योग्य उद्यम है वह किसी अन्य राजा के रणमहोत्सव में दृष्टांतप्रमाण स्वरूप सुना और देखा जाता था।

कामिनः पथि तलेषु तरूणां गाढनम्रविटपेषु निवेश्य।
अध्वखेदमहरन्त वधूना– मम्बुभिः कमलिनीदलनीतैः ।। 2.38 ।।

कामी पुरुष मार्ग में घनीभूत शाखा वाले वृक्षों के नीचे बैठकर कमलिनी के पत्ते में लाये हुए जल से प्रेयसियों का मार्गजन्य श्रम दूर करते थे।

सर्वरात्रमपि संलपनाद्यै– र्विभ्रमैः समपनीय विभाते ।
अप्रमर्दितकुचं युवतीना– मङ्कपालिमलभन्त युवानः।। 2.47 ।।

श्रृंगारजन्य प्राथमिक विलासों में ही पूरी रात व्यतीत कर प्रातः काल युवतियों के अप्रमर्दित स्तनों का युवकों ने आलिंगन प्राप्त किया।

मरुद्भिरेकान्ततुषारवर्षिभि– र्मनोहरन्तीषु यदीयभूमिषु।
नवाभिसारेऽप्यधरं मृगीदृशां विमुक्तशङ्कं व्रणयन्ति कामिनः ।। 2.55

मात्र तुषार(हिमकण) वृष्टि करने गाले बर्फीले वायु से जिस हिमालय के समीपवर्ती भूमिस्थान में शंका रहित होकर कामी लोग मृगनेत्रियों के अधरो का रसास्वादन करते हैं।

विना सशपथै सान्त्वैर्विना व्याजैश्च कामिनाम्।
अपि सान्द्रं परिष्वङ्गमन्वजानन्नवाङ्गनाः।। 4.11

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

नवाङ्गनायें शपथ, आश्वासन और बिना किसी व्याज के (शीत के कारण) कामियों के प्रगाढ़ आलिंगन से परिचित हो गयीं।

गर्भेष्वाप्रपदीनानामगुण्ठनवाससाम्। अशेत द्वन्द्वमस्पन्दमासक्तोरुभुजं मिथः ।। 4.12

गृहों में पैरा तक फैले वस्त्रावरण से आच्छादित स्त्री–पुरुष परस्पर चिपके हुए निष्पन्द शयन करने लगे।

समुद्यतस्तस्य जलान्नृपस्य मुखेन मुग्धस्मितसुन्दरेण।
उल्लासमासादयति स्म सेना वेलेव सिन्धो : शशलाञ्छनेन।। 8.60

जल मार्ग से आने वाले राजा भगीरथ के मन्द हास्य सुशोभित मुख को देखकर सेना वैसे उमड़ पड़ी जैसे चन्द्रमा को देखकर समुद्र तट उमड़ पड़ता है।

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14